



SHRI MOHAMMAD SHAREEF

Shri Mohammad Shareef is a cycle mechanic turned social worker. He is widely recognized as a curator of unclaimed dead bodies from all religion that laid the foundation of social harmony and thus strengthening the faith and affection among the people of all religions of the country.

2. Born on 20th May, 1945, Faizabad, a district of Uttar Pradesh, Shri Shareef belongs to a simple middle class family. Everything was going well but an incident happened in his life that had deep impact on him. His son Mohammd Rais, 25 years old was missing approximately one month after that he got the information of his being killed. He was informed that his son's dead body was thrown in Gomti River in Sultanpur district (56 Kilometer away from Faizabad) by the local police because it was unclaimed. This incident had a tectonic shift in his life. He kept thinking that he could not bury his son's dead body and because of this he was in immense grief.

3. After this painful incident, Shri Shareef to ease his pain, Shri Shareef pledged to cremate/bury/abandoned dead bodies as a curator of those. He did this to any unclaimed dead body irrespective of caste, creed and religion. He just wants to alleviate the pain of families of unclaimed dead bodies. He devoted himself for this noble cause day and night without considering either people's appreciating or criticizing. He just focused on his goal with very high spirit. Initially he faced a lot of problems but after years of effort society was ready to recognize his work and started to provide cooperation and coordination. He has been doing this great job since 1992.

4. Shri Shareef has been the architect of the idea of caring the unclaimed dead bodies for their last rites in the country. By getting overwhelming support from the society he informed the local administration to provide unclaimed dead bodies to him. After getting it he performs all the rituals according to the religion with very high dignity. In this journey he cremated/buried nearly 2500 Muslims and 3000 Hindus unclaimed dead bodies. By this endless effort he has become the symbol of communal harmony in twin city of Faizabad and Ayodhya. Youth of many Hindus, Muslims and others are inspired by him and are ready to contribute in the making of society more peaceful and harmonious. His only aim is to make a popular and equalitarian social structure based on love and fraternity.

5. Shri Shareef's story and work has been published in many news papers and magazines. He got many awards and honours at local as well as at national level like Real Heroes Award in 2009, a CNN-IBN initiative, Godfrey Philips National Bravery Award in 2012 given by the Governor Uttar Pradesh, he has also been the guest of the famous television program "Satyamev Jayate" hosted by famous Bollywood Star, Aamir Khan and many documentary movies have been made on him including "Rising from the Ashes".





श्री मोहम्मद शरीफ

श्री मोहम्मद शरीफ एक साइकिल मैकेनिक और एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं। वह सभी धर्मों के लोगों के लावारिस शवों का अंतिम संस्कार करने के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने सामाजिक सद्भाव की मिसाल पेश की है और देश के सभी धर्मों के लोगों के बीच विश्वास और अपनापन बढ़ाया है।

2. 20 मई 1945 को उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले में जन्मे, श्री शरीफ एक साधारण मध्यम वर्गीय परिवार से ताल्लुक रखते हैं। उनके जीवन में सब कुछ ठीक चल रहा था लेकिन एक आकस्मिक घटना ने उनके मन पर गहरा असर डाला। उनका 25 साल का बेटा मोहम्मद रईस लगभग एक महीने तक लापता रहा, और बाद में उन्हें उसकी हत्या की खबर मिली। उन्हें सूचित किया गया कि स्थानीय पुलिस ने उनके बेटे के शव को लावारिस समझकर सुल्तानपुर जिले में गोमती नदी (फैजाबाद से 56 किलोमीटर दूर) में फेंक दिया है। इस घटना ने उनके जीवन को पूरी तरह से हिलाकर रख दिया। वह यह सोच कर बेहद दुखी हुए कि वह अपने बेटे का अंतिम संस्कार भी नहीं कर पाए।

3. इस दर्दनाक घटना के बाद, श्री शरीफ अपनी पीड़ा को कम करने के लिए लावारिस शवों की अन्त्येष्टि/दफनाने का प्रण लिया। उन्होंने जाति, पंथ और धर्म की परवाह किए बिना सभी लावारिस शवों का अंतिम संस्कार किया। वह सिर्फ लावारिस शवों के परिवारों की वेदना कम करना चाहते थे। उन्होंने लोगों की सराहना या आलोचना की चिंता किए बिना इस नेक कार्य के प्रति खुद को समर्पित कर दिया। वह पूरे उत्साह से भलाई के रास्ते पर बढ़ते रहे। शुरू में उन्हें बहुत सारी दिक्कतों का सामना करना पड़ा, परंतु वर्षों के प्रयास के बाद, लोग उनके काम की तारीफ करने लगे और उनका सहयोग करने लगे। वह 1992 से यह महान कार्य कर रहे हैं ।

4. श्री शरीफ का देश में लावारिस शवों के अंतिम संस्कार का विचार पूरी तरह मौलिक है। समाज का व्यापक समर्थन मिलने के बाद उन्होंने स्थानीय प्रशासन से अनुरोध किया कि वह लावारिस शवों को उन्हें सौंप दे। शव प्राप्त होने के बाद वह पूरे सम्मान से धर्म के अनुसार सभी संस्कार करते हैं। उन्होंने लगभग 2500 मुसलमानों और 3000 हिंदुओं के लावारिस शवों का अंतिम संस्कार किया है। अपने इस अनवरत प्रयास से, वह फैजाबाद और अयोध्या शहरों में सांप्रदायिक सौहार्द का प्रतीक बन गए हैं। कई हिंदू, मुस्लिम युवा और दूसरे लोग उनसे प्रेरित हुए हैं और समाज को अधिक शांतिपूर्ण और सद्भावपूर्ण बनाने में योगदान देने के लिए तत्पर हैं। उनका एकमात्र ध्येय प्रेम और बंधुत्व पर आधारित एक लोकसम्मत और समतावादी समाज का निर्माण करना है।

5. श्री शरीफ की कहानी और काम कई समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। उन्हें स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिनमें 2009 में सीएनएन–आईबीएन का रीयल हीरोज अवार्ड, उत्तर प्रदेश के राज्यपाल द्वारा 2012 में गॉडफ्रे फिलिप्स राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार शामिल हैं। वह प्रसिद्ध बॉलीवुड कलाकार , आमिर खान द्वारा होस्ट किए जाने वाले प्रसिद्ध टेलीविजन कार्यक्रम ''सत्यमेव जयते'' में अतिथि भी रहे हैं और उन पर कई डॉक्यूमेंट्री फिल्में भी बनाई गई हैं, जिनमें ''राइजिंग फ्रॉम द एशेज'' शामिल है।